डा0 ऋचा सिंह
एसोसिएट प्रो0
हिन्दी विभाग
हरिश्चन्द्र स्ना0 महा0 वाराणसी

नयी कविता

- नयी कविता में नयी संवेदना, नयी काव्यानुभूति और नये युग भोग की संवाहिका होने के कारण प्रयोगवाद के बाद जो कावयधारा आधुनिक कविता के इतिहास में प्रवाहित हुई उसे नयी कविता नाम से अभिहित किया गया।
- सन् 1951 ई0 में दूसरा तारसप्तक प्रकासित हुआ, दसके बाद प्रतीक, कृति, नयी कविता नाम से पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई। यहीं से एक नयी काव्यधारा के रूप में नयी काव्यधारा के रूप में नयी कविता का मार्ग प्रसस्त होता है।

नामकरण

- नयी कविता का विधिवत प्रारम्भ सन् 1953 ई0 में माना जाता हैं। इसमें प्रयोगवाद से अधिक कोई नयी विशेषता नहीं है।
- नयी कविता का यह नाम उसके असंपृक्त नयेपन को ध्यान में रखकर रखा गया है। नारायण कुटि का यह कथन समीचीन लगता है। ''जब तक आलोच्य काव्यधारा की पूर्ण विशेषताएँ प्रस्पुटित नहीं होगी। हमें 'नयी कविता' नाम से सन्तुष्ट होकर काम लेना ही समीचीन लगता है।''
- नयी कविता उस लघु मानव और लघुपरिवेश की अभिव्यक्ति है जो एक ओर आज की यातना भोग रहा है और दूसरी ओर उससे लड़ भी रहा है और अपना अस्तित्व सिद्ध करना चाहता है। यह साक्षात्कार और विवेक पर आधारित मुक्त यथार्थ का समर्थन करती है।

नयी कविता में चार तत्व मुख्य हैं।

1. वर्जन और कुण्ठा से मुक्ति
2. क्षणवाद
3. अनुभूति की सच्चाई
4. बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि

विशेषताए

- जीवन में आस्था उपलब्ध जीवन से सीमातित विश्वास जो जीवन को इसके सम्पूर्ण पाप–पुण्य गुण–दोष तथा विधि–निषेध के साथ स्वीकार करे। आज के जीवन मूल्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टि हो। यह समकालीन काव्यधारा वर्तमान समय को पूरी तरह स्वीकार करती है। इसकी लघु मानव की अवधारणा भी जीवन के पूर्णता के प्रति आस्था का संकेत है।
- नयी कविता में व्यक्ति की अभिव्यक्ति की स्वच्छन्द प्रवृत्ति है। जिसमें अत्मानुभूति को बिना प्रयास और बन्धन को व्यक्त किया गया है।
- नयी कविता में यथार्थवादी अहवाद है जिसमें यथार्थ की स्वीकृति के साथ कवि अपने को उसका अंस मानकर अभिव्यक्त करता है।
- नयी कविता में यथार्थ से प्रेरित व्यंग्यदृष्टि है।
- नयी कविता में अनुशासित, संक्षिप्त, और प्रतिकात्मक अभिव्यक्ति है।
- श्री कान्त वर्मा के अनुसार – स्वच्छन्दतावाद के नये रूप का दर्शन होता है। दस काव्यधारा में वैद्धिकता के साथ–साथ कल्पना और भावुकता का मिश्रण मिलता है।
- प्रकृति के प्रति अनुराग – अपने अनुभूत सत्य की अभिव्यक्ति के लिए इन कवियों ने प्रकृति का सहारा लिया।
- कलापक्ष नयी कविता में कलापक्ष की दृष्टि से भाषा में देशी–विदेशी अनेक अनुशासनों के शब्द, नये–नये प्रतीक और बिम्ब मिलते है। कुछ अटपट प्रयोग भी सामने आते है। जिनको भदेश कह सकते है।

धन्यवाद–